ZULM KA ANJAAM (Hindi)

रिसाला नं.74

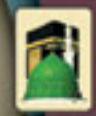

# ज़ुल्म का अन्जाम




शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी



- पराया गेहूं का दाना तोड़ने का उख़रवी नुक़्सान 12
- अदाए क़र्ज़ में बिला वजह ताख़ीर गुनाह है 15
- हम शरीफ़ के साथ शरीफ़ और...... 26
- बिग़ैर इजाज़त किसी की चप्पल पहनना कैसा ? 29
- मज़्लूम की इमदाद करना ज़रूरी है 41
- मुख़्तलिफ़ हुक़ूक़ सीखने का त़रीक़ा 46

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ۙ

# ज़ुल्म का अन्जाम[1]

**शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला *( 64 स-फ़ह़ात )* मुकम्मल पढ़ लीजिये इनْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रो पड़ेंगे ।**

## मोतियों वाला ताज

''**अल क़ौलुल बदीअ़**'' में है : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा कि वोह जन्नती हुल्ला (लिबास) ज़ैबे तन किये **मोतियों वाला ताज** सर पर सजाए ''शीराज़'' की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं, ख़्वाब देखने वाले ने पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या

---

येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सि. 1429 हि. / 2008 ई.) में सह़राए मदीना मुलतान में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम के साथ तहरीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

**मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

मुआ़-मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, मेरा इक्राम फ़रमाया और **मोतियों वाला ताज** पहना कर दाख़िले जन्नत किया। पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं मह़बूबे रब्बुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया। (अल क़ौलुल बदीअ़, स. 254)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## ख़ौफ़नाक डाकू

शैख़ अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने सफ़र नामे में लिखते हैं : एक बार मैं शहर बसरा से एक क़रिया (या'नी गाउं) की त़रफ़ जा रहा था। दो पहर के वक़्त यकायक एक **ख़ौफ़नाक डाकू** हम पर ह़म्ला आवर हुवा, मेरे रफ़ीक़ (या'नी साथी) को उस ने शहीद कर डाला, हमारा माल व मताअ़ छीन कर मेरे दोनों[2] हाथ रस्सी से बांधे, मुझे ज़मीन पर डाला और फ़िरार हो गया। मैं ने जूं तूं हाथ खोले और चल

पड़ा मगर परेशानी के आ़लम में रस्ता भूल गया, यहां तक कि रात आ गई। एक त़रफ़ आग की रोशनी देख कर मैं उसी सम्त चल दिया, कुछ देर चलने के बा'द मुझे एक ख़ैमा नज़र आया, शिद्दते प्यास से निढाल हो चुका था, लिहाज़ा ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर मैं ने सदा लगाई : اَلْعَطَش! اَلْعَطَش! या'नी "हाए प्यास ! हाए प्यास !" इत्तिफ़ाक़ से वोह ख़ैमा उसी **ख़ौफ़नाक डाकू** का था ! मेरी पुकार सुन कर बजाए पानी के नंगी तलवार लिये वोह बाहर निकला और चाहा कि एक ही वार में मेरा काम तमाम कर दे, उस की बीवी आड़े आई मगर वोह न माना और मुझे घसीटता हुवा दूर जंगल में ले आया और मेरे सीने पर चढ़ गया मेरे गले पर तलवार रख कर मुझे ज़ब्ह़ करने ही वाला था कि यकायक झाड़ियों की त़रफ़ से एक शेर दहाड़ता हुवा बर आमद हुवा, शेर को देख कर ख़ौफ़ के मारे डाकू दूर जा गिरा, शेर ने झपट कर उसे चीर फाड़ डाला और झाड़ियों में ग़ाइब हो गया। मैं इस ग़ैबी इमदाद पर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाया। सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

**ज़ालिम को मोहलत मिलती है**

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? **ज़ुल्म का अन्जाम** किस क़दर भयानक है। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى **''सह़ीह़ बुख़ारी''** में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे **मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम को मोहलत देता है यहां तक कि जब उस को अपनी पकड़ में लेता है तो फिर उस को नहीं छोड़ता । येह फ़रमा कर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 12 सूरए हूद की आयत 102 तिलावत फ़रमाई :

كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐसी ही पकड़ है तेर रब عَزَّوَجَلَّ की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर । बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं है।

(सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 3, स. 247, ह़दीस : 4686)

दहशत गरदों, लुटेरों, क़त्लो ग़ारत गरी का बाज़ार गर्म करने वालों को बयान कर्दा हिकायत से इब्रत हांसिल करनी चाहिये, उन्हें अपने अन्जाम से बे ख़बर नहीं रहना चाहिये कि जब दुन्या में भी क़हर की बिजली गिरती है तो इस तरह के ज़ालिम लोग कुत्ते की मौत मारे जाते हैं और इन पर दो[2] आंसू बहाने वाला भी कोई नहीं होता और आह ! आख़िरत की सज़ा कौन बरदाश्त कर सकता है ! यकीनन लोगो पर ज़ुल्म करना गुनाह, दुन्या व आखिरत की बरबादी का सबब और अ़ज़ाबे जहन्नम का बाइस है । इस में **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की ना फ़रमानी भी है और बन्दों की हक़ त-लफ़ी भी । हज़रते जुरजानी قدس سره النورانی अपनी किताब **''अत्ता'रीफ़ात''** में **ज़ुल्म के मा'ना** बयान करते हुए लिखते हैं : किसी चीज़ को उस की जगह के इलावा कहीं और रखना । (अत्ता'रीफ़ात, लिल जुरजानी, स. 102) शरीअ़त में **ज़ुल्म** से मुराद येह है कि किसी का हक़ मारना, किसी को ग़ैर महल में ख़र्च करना, किसी को बिग़ैर क़ुसूर के सज़ा देना । (मिरआत, जि. 6, स. 669) जिस **ख़ौफ़नाक डाकू** का अभी आप ने तज़्किरा समाअ़त फ़रमाया, वोह लूट मार की ख़ातिर क़त्ले ना हक़ भी करता था, दुन्या ही में उस ने **ज़ुल्म का अन्जाम** देख लिया । न जाने अब

उस की **क़ब्र** में क्या हो रहा होगा ! नीज़ क़ियामत का मुआ़-मला अभी बाक़ी है। आज भी डाकू उ़मूमन माल के लालच में क़त्ल भी कर डालते हैं। याद रखिये ! क़त्ले ना ह़क़ इन्तिहाई भयानक जुर्म है।

## औंधे मुंह जहन्नम में

**ह़ज़रते सय्यिदुना** मुह़म्मद बिन ई़सा तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने मशहूर मज्मूअए अह़ादीस "**तिरमिज़ी**" में ह़ज़राते सय्यिदैना अबू सईद ख़ुदरी व अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से नक़्ल करते हैं : "अगर तमाम आस्मान व ज़मीन वाले एक मुसल्मान का ख़ून करने में शरीक हो जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सभों को मुंह के बल औंधा कर के जहन्नम में डाल देगा।" (सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 3, स. 100, ह़दीस : 1403, दारुल फिक्र बैरूत)

## आग की बेड़ियां

**लोगों** का माले ना ह़क़ दबा लेने वालों, डकेतियां करने वालों, चिठ्ठियां भेज कर रक़मों का मुत़ा-लबा करने वालों को ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये कि आज जो माले ह़राम ब आसानी गले से नीचे उतरता हुवा मह़सूस हो रहा है वोह बरोज़े

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

क़ियामत कहीं सख़्त मुसीबत में न डाल दे । सुनो ! सुनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "**क़ुर्रतुल उ़यून**" में नक़्ल करते हैं : बेशक पुल सिरात़ पर **आग की बेड़ियां** हैं, जिस ने ह़राम का एक दिरहम भी लिया उस के पाउं में **आग की बेड़ियां** डाली जाएंगी, जिस के सबब उसे पुल सिरात़ पर गुज़रना दुश्वार हो जाएगा, यहां तक कि उस दिरहम का मालिक उस की नेकियों में से उस का बदला न ले ले अगर उस के पास नेकियां नहीं होंगी तो वोह उस के गुनाहों का बोझ भी उठाएगा और जहन्नम में गिर पड़ेगा ।

(क़ुर्रतुल उ़यून व मअ़हू अरौंजुल फ़ाइक़, स. 392 कोएटा)

## मुफ़्लिस कौन ?

**ह़ज़रते** सय्यिदुना मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने मशहूर मज्मूअ़ए ह़दीस "**सह़ीह़ मुस्लिम**" में नक़्ल करते हैं : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया :

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस कौन है**? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हों वोह मुफ़्लिस है। फ़रमाया : "मेरी उम्मत में **मुफ़्लिस** वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आया और यूं आया कि इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा तो उस की नेकियों में से कुछ इस मज़्लूम को दे दी जाएं और कुछ उस मज़्लूम को फिर अगर इस के ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे उन की अदाएगी से पहले इस की नेकियां ख़त्म हो जाएं तो उन मज़्लूमों की ख़त़ाएं उस ज़ालिम पर डाल दी जाएं फिर उसे आग में फेंक दिया जाए।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, स. 1394, ह़दीस : 2581, दारे इब्ने ह़ज़्म बैरूत)

## लरज़ उठो !

**ऐ नमाज़ियो !** ऐ रोज़ादारो ! ऐ ह़ाजियो ! ऐ पूरी ज़कात अदा करने वालो ! ऐ ख़ैरात व ह़-सनात में ह़िस्सा लेने वालो ! ऐ नेक सूरत नज़र आने वाले मालदारो ! डर जाओ !

लरज़ उठो ! ह़क़ीक़त में मुफ़्लिस वोह है जो नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व स–दक़ात, सख़ावतों, फ़लाह़ी कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद क़ियामत में ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! जिन को कभी गाली दे कर, कभी बिला इजाज़ते शर–ई डांट कर, बे इ़ज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मारपीट कर के, आ़रिय्यतन चीज़ें ले कर क़स्दन वापस न लौटा कर, क़र्ज़ दबा कर, दिल दुखा कर नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उठा कर वासिले जहन्नम कर दिया जाएगा।

**"सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़" में है, अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :"तुम लोग ह़ुक़ूक़, ह़क़ वालों के सिपुर्द कर दोगे ह़त्ता कि बे सींग वाली का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाएगा।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, स. 1394, ह़दीस : 2582)

मत़्लब येह कि अगर तुम ने दुन्या में लोगों के ह़ुक़ूक़

अदा न किये ला महाला (या'नी हर सूरत में) क़ियामत में अदा करोगे, यहां दुन्या में माल से और आख़िरत में आ'माल से, लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि दुन्या ही में अदा कर दो वरना पछताना पड़ेगा। "**मिरआत शर्हे मिश्कात**" में है : "जानवर अगर्चे शर-ई अह़काम के मुकल्लफ़ नहीं हैं मगर हुक़ूक़ुल इबाद जानवरों को भी अदा करने होंगे।" (मिरआत, जि. 6, स. 674) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाले ह़ज़रात हुक़ूक़ुल इबाद के ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाले मुआ़-मलात में भी ऐसी एह़तियात़ करते हैं कि ह़ैरत में डाल देते हैं। चुनान्चे

## आधा सेब

**ह़ज़रते सय्यिदुना** इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बाग़ के अन्दर नहर **में सेब** देखा, उठाया और खा लिया। खाते तो खा लिया मगर फिर परेशान हो गए कि येह मैं ने क्या किया ! मैं ने इस के मालिक की इजाज़त के बग़ैर क्यूं खाया ! चुनान्चे तलाशते हुए बाग़ तक पहुंचे, बाग़ की मालिका एक ख़ातून थीं, उन से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मा'ज़िरत त़लब फ़रमाई, उस ने अ़र्ज़ की : येह बाग़ मेरा और बादशाह का

मुश-त-रका है, मैं अपना ह़क़ मुआ़फ़ करती हूं लेकिन बादशाह का ह़क़ मुआ़फ़ करने की मजाज़ नहीं। बादशाह बल्ख़ में था लिहाज़ा सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **आधा सेब** मुआ़फ़ करवाने के लिये बल्ख़ का सफ़र इख़्तियार किया और मुआ़फ़ करवा कर ही दम लिया। (رحلۃ ابن بطوطۃ ج ۱ ص۳۴)

## ख़िलाल का वबाल

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत में बिग़ैर पूछे दूसरों की चीज़ें हड़प कर जाने वालों, सब्ज़ियों और फलों की रेढ़ियों से चुप चाप कुछ न कुछ उठा कर टोकरी में डाल लेने वालों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली शै भी अगर बिग़ैर इजाज़त इस्ति'माल कर डाली और क़ियामत के रोज़ पकड़े गए तो क्या बनेगा ? चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قدس سرہ النورانی "**तम्बीहुल मुग़्तर्रीन**" में नक़्ल करते हैं : **मशहूर** ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **वह्ब बिन मुनब्बेह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक इस्राईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ इ़बादत करता रहा कि दिन

को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इबादत करता, न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा हिसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर **एक लकड़ी** जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर **दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआ़-मला हुक़ूक़ुल इबाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था उस की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स. 51, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

## गेहूं का दाना तोड़ने का उख़रवी नुक़्सान

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़रा ग़ौर कीजिये ! एक तिन्का जन्नत में दाख़िले से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'मूली लकड़ी के ख़िलाल की तो बात ही कहां है। बा'ज़ लोग दूसरों के लाखों बल्कि करोड़ों रुपै हड़प कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हिदायत इ़नायत फ़रमाए। आमीन। एक और इ़ब्रत नाक हिकायत मुला-हज़ा

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (عالم)

फ़रमाइये जिस में सिर्फ़ एक गेहूं के दाने के बिला इजाज़त खाने के लिये नहीं सिर्फ़ तोड़ डालने के उख़्रवी नुक़्सान का तज़्किरा है । चुनान्चे मन्क़ूल है कि एक शख़्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, लेकिन ह़िसाब व किताब हुवा यहां तक कि उस दिन के बारे में भी मुझ से पूछगछ हुई जिस रोज़ मैं रोज़े से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब इफ़्त़ार का वक़्त हुवा तो मैं ने गेहूं की एक बोरी में से गेहूं का एक दाना उठा लिया और उस को तोड़ कर खाना ही चाहता था कि एक दम मुझे एह़सास हुवा कि येह खाना मेरा नहीं, चुनान्चे मैं ने उसे जहां से उठाया था फ़ौरन उसी जगह डाल दिया । और इस का भी ह़िसाब लिया गया यहां तक कि उस पराए **गेहूं के तोड़े जाने के नुक़्सान के ब क़दर मेरी नेकियां मुझ से ली गई ।**

(मिरक़ातुल मफ़ातीह, जि. 8, स. 811,तहतुल ह़दीस : 5083)

# सात सो बा जमाअ़त नमाज़ें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! एक पराया गेहूं बिग़ैर इजाज़त तोड़ देना भी नुक़्साने क़ियामत का सबब हो सकता है। अब सिर्फ़ गेहूं का दाना तोड़ने या खा जाने ही की कहां बात है। आज कल तो कई लोग बिग़ैर दा'वत के दूसरों के यहां खाना ही खा डालते हैं ! ह़ालां कि बिग़ैर बुलाए किसी की दा'वत में घुस जाना शरअ़न मन्अ़ है। अबू दावूद शरीफ़ की ह़दीसे पाक में येह भी है : "जो बिग़ैर बुलाए गया वोह चोर हो कर घुसा और ग़ारत गरी कर के निकला।" (सु-ननो अबी दावूद, जि. 3, स. 379, ह़दीस : 3741) नीज़ आज कल क़र्ज़ के नाम पर लोगों के हज़ारों बल्कि लाखों रुपै हड़प कर लिये जाते हैं। अभी तो येह सब आसान लग रहा होगा लेकिन क़ियामत में बहुत महंगा पड़ जाएगा। ऐ लोगों का क़र्ज़ा दबा लेने वालो ! कान खोल कर सुनो ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं : "जो दुन्या में किसी के तक़्रीबन तीन[3] पैसे दैन (या'नी क़र्ज़) दबा लेगा बरोज़े क़ियामत उस के

बदले **सातसो700 बा जमाअ़त नमाज़ें** देनी पड़ जाएंगी।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 25, स. 69) जी हां ! जो किसी का क़र्ज़ा दबा ले वोह ज़ालिम है और सख़्त नुक़्सान व ख़ुस्रान में है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान त़-बरानी قدس سرہ النورانی अपने मज्मूअ़ए ह़दीस'' **त़-बरानी**'' में नक़्ल करते हैं : सरकारे **मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जिस का मफ़्हूम है : ''ज़ालिम की नेकियां मज़्लूम को, मज़्लूम के गुनाह ज़ालिम को दिलवाए जाएंगे।'' (अल मो'जमुल कबीर, जि. 4, स. 148, ह़दीस : 3969, दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत)

## अदाए क़र्ज़ में बिला वजह ताख़ीर गुनाह है

**क़र्ज़** की बात चली है तो येह भी बताता चलूं कि **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی **कीमियाए सआ़दत** में नक़्ल करते हैं : ''जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी त़रह़ अदा कर दूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ़ करते हैं कि इस का क़र्ज़ अदा हो जाए।'' (उन्जुर : इत्तिह़ाफ़ुस्सादह लिज़्ज़ुबैदी, जि. 6, स. 409, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

और अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़ ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा। ख़्वाह रोज़े की ह़ालत में हो या सो रहा हो उस के ज़िम्मे गुनाह लिखा जाता रहेगा। (गोया हर ह़ाल में गुनाह का मीटर चलता रहेगा) और हर सूरत में उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत पड़ती रहेगी। येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की ह़ालत में भी उस के साथ रहता है। अगर अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनहगार है। अगर क़र्ज़ के बदले ऐसी चीज़ दे जो क़र्ज़ ख़्वाह को ना पसन्द हो तब भी देने वाला गुनहगार होगा और जब तक उसे राज़ी नहीं करेगा इस ज़ुल्म के जुर्म से नजात नहीं पाएगा क्यूं कि उस का येह फ़े'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं।" (कीमियाए सआ़दत, जि. 1, स. 336)

## ग़ैरत मन्दी का तक़ाज़ा

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब मत़्लब होता है तो

ख़ुशामद और झूटे वा'दे कर के बा'ज़ लोग क़र्ज़ा ह़ासिल कर लेते हैं मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! ले लेने के बा'द अदा करने का नाम नहीं लेते । **ग़ैरत मन्दी का तक़ाज़ा** तो येह है कि जिस से क़र्ज़ लिया है अपने उस मोह्सिन के घर जल्द तर जा कर शुक्रिया के साथ क़र्ज़ अदा कर आते, मगर आज कल ह़ालत येह है कि अगर क़र्ज़ अदा करना भी है तो क़र्ज़ ख़्वाह को ख़ूब धक्के खिला कर, रुला रुला कर उस बेचारे की रक़म को तोड़ फोड़ कर या'नी थोड़ी थोड़ी कर के क़र्ज़ लौटाया जाता है। याद रखिये ! बिला वजह क़र्ज़ ख़्वाह को धक्के खिलाना भी ज़ुल्म है । अ़ाम तौ़र पर ब्योपारियों की अ़ादत होती हे कि रक़म गल्ले में मौजूद होने के बा वुजूद शाम को ले जाना, कल आना वग़ैरा कह कर बिला इजाज़ते शर-ई टरख़ाते, टहलाते और धक्के खिलाते हैं, येह नहीं सोचते कि हम कितना बड़ा वबाल अपने सर ले रहे हैं,अगर शाम को क़र्ज़ चुकाना ही है तो अभी सुब्ह़ के वक़्त चुका देने में ह़रज ही क्या है !

## नेकियों के ज़रीए़ मालदार

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी

आख़िरत के लिये बहुत ज़ियादा नुक़्सान देह है, ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़र्ब عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ फ़रमाते हैं : कई लोग नेकियों की कसीर दौलत लिये दुन्या से मालदार रुख़्सत होंगे मगर बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियों के बाइस क़ियामत के दिन अपनी सारी नेकियां खो बैठेंगे और यूं ग़रीब व नादार हो जाएंगे ।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स. 53, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मुह़म्मद बिन अ़ली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "**क़ूतुल क़ुलूब**" में फ़रमाते हैं : "ज़ियादा तर (अपने नहीं बल्कि) दूसरों के गुनाह ही दोज़ख़ में दाख़िले का बाइस होंगे जो (हुक़ूक़ुल इबाद तलफ़ करने के सबब) इन्सान पर डाल दिये जाएंगे । नीज़ बे शुमार अफ़राद (अपनी नेकियों के सबब नहीं बल्कि) दूसरों की नेकियां ह़ासिल कर के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।" (क़ूतुल क़ुलूब, जि. 2, स. 292) ज़ाहिर है दूसरों की नेकियां ह़ासिल करने वाले वोही होंगे जिन की दुन्या में दिल आज़ारियां और ह़क़ त-लफ़ियां हुई होंगी । यूं बरोज़े क़ियामत मज़्लूम और दुखियारे फ़ाएदे में रहेंगे ।

## अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم को ईज़ा देने वाला

**हुक़ूक़ुल इ़बाद** का मुआ़-मला बड़ा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बे बाकी का दौर दौरा है, अ़वाम तो कुजा ख़्वास कहलाने वाले भी उ़मूमन इस की त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। ग़ुस्से का मरज़ आ़म है इस की वजह से अक्सर "ख़्वास" भी लोगों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस की त़रफ़ इन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती कि किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई़ दिल आज़ारी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ह़ा 342 में त़-बरानी शरीफ़ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰه" (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शर-ई़) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।" (अल मो'जमुल औसत़, जि. 2, स. 387, ह़दीस : 3607) **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم को ईज़ा देने वालों के बारे में

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सू-रतुल अह़ज़ाब आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

## दिल हिला देने वाली ख़ारिश

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर आप कभी किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी कर बैठे हैं तो आप का चाहे उस से कैसा ही क़रीबी रिश्ता है, बड़े भाई हैं, वालिद हैं, शोहर हैं, सुसर है या कितने ही बड़े रुत्बे के मालिक हैं, चाहे सद्र हैं या वज़ीर हैं, उस्ताज़ हैं या पीर हैं, (या) मुअज़्ज़िन हैं या इमाम व ख़तीब जो कुछ भी हैं बिग़ैर शरमाए

तौबा भी कीजिये और उस बन्दे से मुआ़फ़ी मांग कर उस को राज़ी भी कर लीजिये वरना जहन्नम का हौलनाक अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। सुनो ! सुनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन **श-जरह** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ समुन्दर के कनारे होते हैं इसी त़रह़ जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुख़्ती ऊंटों जैसे सांप **और ख़च्चरों** जैसे बिच्छू रहते हैं। अहले जहन्नम जब अ़ज़ाब में कमी के लिये फ़रियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोह जूं ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की त़रफ़ भागेंगे फिर उन पर खुजली मुसल्लत़ कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : "ऐ फुलां ! क्या तुझे तक्लीफ़ हो रही है ?" वोह कहेगा : हां। तो कहा जाएगा "येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था।" (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 4, स. 280, ह़दीस : 5649, दारुल फ़िक्र बैरूत)

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

# जन्नत में घूमने वाला

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मुसल्मान को ईज़ा देना मुसल्मान का काम नहीं बल्कि इस का काम तो येह है कि मुसल्मान से ईज़ा देने वाली चीज़ें दूर करे। सय्यिदुना इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى **सह़ीह़ मुस्लिम** में नक़्ल करते हैं : ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मैं ने एक शख़्स को **जन्नत में घूमते हुए** देखा कि जिधर चाहता है निकल जाता है क्यूं कि उस ने इस दुन्या में एक ऐसे दरख़्त को रास्ते से काट दिया था जो कि लोगों को तक्लीफ़ देता था।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, स. 1410, ह़दीस : 2617)

## आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे इन्तिहा आ़जिज़ी

हमारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने उस्वए ह़-सना के ज़रीए़ हम ग़ुलामों को हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़याल रखने की जिस ह़सीन अन्दाज़ में ता'लीम दी है उस

की एक रिक़्क़त अंगेज़ झलक मुला-हज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे हमारे जान से भी प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ाते ज़ाहिरी के वक़्त इज्तिमाए़ आ़म में ए'लान फ़रमाया : अगर मेरे ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ आता हो, अगर मैं ने किसी की जान व माल और आबरू को सदमा पहुंचाया हो तो मेरी जान व माल और आबरू ह़ाज़िर है, "इस दुन्या में बदला ले ले।" तुम में से कोई येह अन्देशा न करे कि अगर किसी ने मुझ से बदला लिया तो मैं नाराज़ हो जाऊंगा येह मेरी शान नहीं। मुझे येह अम्र बहुत पसन्द है कि अगर किसी का ह़क़ मेरे ज़िम्मे है तो वोह मुझ से वुसूल कर ले या मुझे मुआ़फ़ कर दे। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! जिस शख़्स पर कोई ह़क़ हो उसे चाहिये कि वोह अदा करे और येह ख़याल न करे कि रुस्वाई होगी इस लिये कि दुन्या की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से बहुत आसान है।

(तारीख़े दिमिश्क़ लि इब्ने अ़साकिर, जि. 48, स. 323 मुलख़्ख़सन)

## मैं ने तेरा कान मरोड़ा था

**ह़ज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने

एक ग़ुलाम से फ़रमाया : मैं ने एक मर्तबा तेरा कान मरोड़ा था इस लिये तू मुझ से उस का बदला ले ले। (अर्रियाज़ुन्नज़रह फ़ी मनाक़िबुल अ़शरह, जुज़ : 3, स. 45, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

## मुसल्मान की ता'रीफ़

**अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से **मुसल्मान** को तक्लीफ़ न पहुंचे और (कामिल) मुहाजिर वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से अल्लाह तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया है। (सहीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 15, ह़दीस : 10)

इस ह़दीसे पाक के तह़त मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि "कामिल **मुसल्मान** वोह है जो लु-ग़तन शरअ़न हर त़रह़ से **मुसल्मान** हो (और) मोमिन वोह है जो किसी **मुसल्मान** की ग़ीबत न करे, गाली, त़ा'ना चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे न उस के ख़िलाफ़ कुछ तह़रीर करे।" मज़ीद फ़रमाते

हैं कि ''कामिल मुहाजिर वोह है जो तर्के वत़न के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लु-ग़तन हिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी।'' (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 29)

## १मुसल्मान को घूरना, डराना

**सरकारे मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **मुसल्मान** के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे **मुसल्मान** की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे। (इत्तह़ाफ़ुस्सादह लिज़्ज़ुबैदी, ज हि. 7, स. 177) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : **किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे।** (सु-ननो अबी दावूद, जि. 4, स. 391, ह़दीस : 5004, दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** मा'लूम हुवा कि मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का मुह़ाफ़िज़ और ग़म ख़्वार होता है, आपस में लड़ना झगड़ना येह मुसल्मान का शेवा नहीं बल्कि इस से बहुत बड़े बड़े नुक़्सानात हो जाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی अपने मज्मूअ़ए अहादीस अल मौसूम "**सहीह़ बुख़ारी**" में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मक्की म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हमें शबे क़द्र बताएं कि किस रात में है, दो[2] मुसल्मान आपस में झगड़ रहे थे, सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं इस लिये आया था कि तुम्हें शबे क़द्र बताऊं मगर फ़ुलां फ़ुलां शख़्स झगड़ रहे थे इस लिये इस का तअ़य्युन उठा लिया गया। (सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 662, ह़दीस : 2023)

## हम शरीफ़ के साथ शरीफ़ और.....

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़दीसे मुबा-रका में हमारे लिये ज़बर दस्त दर्से इ़ब्रत है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शबे क़द्र की निशान देही फ़रमाने ही वाले थे कि दो[2] मुसल्मानों का बाहम लड़ना मानेअ़ (या'नी रुकावट) हो गया और हमेशा हमेशा के लिये शबे क़द्र को मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) कर दिया गया। इस से अन्दाज़ा कीजिये कि आपस का

झगड़ा किस क़दर नुक़्सान देह है। मगर आह ! झगड़ालू मिज़ाज के लोगों को कौन समझाए ? आज कल तो बा'ज़ मुसल्मान बड़े फ़ख़्र से येह कहते सुनाई दे रहे हैं कि "मियां इस दुन्या में शरीफ़ रह कर गुज़ारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बद मआ़शों के साथ बद मआ़श हैं !" और सिर्फ़ कहने पर इक्तिफ़ा थोड़े ही है ! बसा अवक़ात तो मा'मूली सी बात पर पहले ज़बान दराज़ी, फिर दस्त अन्दाज़ी, फिर चाक़ू बाज़ी बल्कि गोलियां तक चल जाती हैं। सद करोड़ अफ़्सोस ! आज के बा'ज़ मुसल्मान बा वुजूद मुसल्मान होने के कभी पठान बन कर, कभी पंजाबी कहला कर, कभी सराइकी बन कर, कभी मुहाजिर हो कर, कभी सिन्धी और बलूच क़ौमिय्यत का ना'रा लगा कर एक दूसरे का गला काट रहे हैं, दुकानों और गाड़ियों को आग लगा रहे हैं। मुसल्मानो ! आप तो एक दूसरे के मुहा़फ़िज़ थे, आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आक़ा रह़मतों वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान तो येह है कि "बाहम मह़ब्बत व रह़म व नरमी में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म की त़रह़ है कि अगर एक उ़ज़्व को तक्लीफ़ पहुंचे तो सारा जिस्म

उस तक्लीफ़ को महसूस करता है।''

(सह़ीह़ मुस्लिम, स. 1396, ह़दीस : 2586)

एक शाइर ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है :

*मुब्तलाए दर्द कोई उ़ज़्व हो रोती है आंख*

*किस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आंख*

## जो बुराई करे उस पर भी ज़ुल्म न करो

''**तिरमिज़ी शरीफ़**'' की रिवायत में है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''तुम लोग नक़्क़ाल न बनो कि कहो अगर लोग भलाई करेंगे तो हम भी भलाई करेंगे और अगर लोग **ज़ुल्म** करेंगे तो हम भी **ज़ुल्म** करेंगे, लेकिन अपने नफ़्स को क़रार दो कि लोग भलाई करें तो तुम भी भलाई करो और लोग **बुराई** करें तो तुम **ज़ुल्म** न करो।''

(सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 3, स. 405, ह़दीस : 2014)

## पराई क़लम लौटाने के लिये सफ़र

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! हमारे

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें मुसल्मानों की हमदर्दी करने के तअ़ल्लुक़ से कितने प्यारे म-दनी फूल इ़नायत फ़रमाए हैं। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن दूसरों के हुक़ूक़ के मुआ़-मले में इन्तिहाई द-रजे हुस्सास होते थे और अदाएगिये ह़क़ के मुआ़-मले में ह़ैरत अंगेज़ ह़द तक मोह़तात़ भी। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुल्के शाम में चन्द रोज़ के लिये मुक़ीम हुए, वहां अह़ादीसे मुबा-रका लिखते रहे। एक बार उन का क़लम टूट गया लिहाज़ा आ़रिय्यतन (या'नी वक़्ती त़ौर पर) किसी और से **क़लम** ह़ासिल किया, वापसी पर भूले से वोह **क़लम** वत़न साथ लेते आए। जब याद आया तो सिर्फ़ **क़लम** वापस देने के लिये आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने वत़न से मुल्के शाम का सफ़र किया।

(तज़्किर-रतुल वाइ़ज़ीन, स. 243 कोएटा)

## बिग़ैर इजाज़त किसी की चप्पल पहनना कैसा ?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पराई चीज़ के मुआ़-मले में अल्लाह तआ़ला से किस क़दर डरते थे ! मगर अफ़्सोस ! अब हम इस

सिल्सिले में बिल्कुल बे ख़ौफ़ होते जा रहे हैं ! याद रखिये ! अभी तो दूसरों की चीजें जान बूझ कर रख लेना बहुत आसान मा'लूम होता है मगर क़ियामत में साहिबे ह़क़ को इस का बदला चुकाना और उस को राज़ी करना बहुत ही मुश्किल हो जाएगा लिहाज़ा दूसरों के एक एक दाने और एक एक तिन्के के बारे में एह़तियात़ करनी चाहिये, बिग़ैर इजाज़त किसी की कोई चीज़ म-सलन चादर, तौलिया, बरतन, चारपाई, कुरसी वग़ैरा वग़ैरा हरगिज़ इस्ति'माल नहीं करनी चाहिये हां अगर इन चीज़ों के मालिक की त़रफ़ से इज़्ने आ़म हो तो इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं। म-सलन किसी के घर मेहमान बन कर गए तो उ़मूमन इस त़रह़ की चीज़ों के इस्ति'माल की साहिबे ख़ाना की त़रफ़ से छूट होती है। अक्सर देखा जाता है कि मस्जिद में बा'ज़ लोग बिग़ैर इजाज़ते मालिक उस की चप्पलें पहन कर इस्तिन्जाख़ाने चले जाते हैं। ब ज़ाहिर येह अ़मल बहुत ही मा'मूली लग रहा है मगर ज़रा सोचिये तो सही ! आप किसी की चप्पलें पहन कर इस्तिन्जाख़ाने तशरीफ़ ले गए और उस का मालिक बाहर जाने के लिये अपनी चप्पलों की त़रफ़ आया, ग़ाइब पा कर येह

समझ कर कि चोरी हो गई बेचारा दिल मसूस कर रह गया और नंगे पाउं ही चला गया। आप ने अगर्चे वापस आ कर चप्पलें जहां से ली थीं वहीं रख दीं मगर उस का मालिक तो उन्हें ज़ाएअ़ कर चुका। इस का वबाल किस पर ? यक़ीनन आप पर और आप ही ज़ालिम ठहरे। आह ! बरोज़े क़ियामत ज़ालिम की ह़सरत ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "बसा अवक़ात एक ही ज़ुल्म के बदले ज़ालिम की तमाम नेकियां ले कर भी मज़्लूम ख़ुश न होगा।" (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स. 50) जभी तो हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली बातों में भी एह़तियात़ फ़रमाते थे। **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं :

## ख़ुश्बू सूंघने में एह़तियात़

**ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन** सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने मुसल्मानों के लिये मुश्क का वज़्न किया जा रहा था, तो उन्हों ने फ़ौरन अपनी नाक

बन्द कर ली ताकि उन्हें ख़ुश्बू न पहुंचे जब लोगों ने येह बात महसूस की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : **ख़ुश्बू सूंघना** ही तो इस का नफ़्अ़ है । (चूंकि मेरे सामने इस वक़्त वाफ़िर मिक़्दार में मुश्क मौजूद है लिहाज़ा इस की ख़ुश्बू भी ज़ियादा आ रही है और मैं इतनी ज़ियादा ख़ुश्बू सूंघ कर दीगर मुसल्मानों के मुक़ाबले में ज़ाइद नफ़्अ़ हासिल करना नहीं चाहता ।) (एह्याउल उ़लूम, जि. 2, स. 121, क़ूतुल क़ुलूब, जि. 2, स. 533)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## चराग़ बुझा दिया !

''**कीमियाए सआ़दत**'' में है : एक बुज़ुर्ग रात के वक़्त किसी मरीज़ के सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा थे, क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से वोह बीमार फ़ौत हो गया, क़ुरबान जाइये उन बुज़ुर्ग की म-दनी सोच पर कि उन्हों ने फ़ौरन **चराग़ गुल** कर दिया और फ़रमाया : ''अब इस चराग़ के तेल में वारिसों का ह़क़ भी शामिल हो गया है ।'' (कीमियाए सआ़दत, जि. 1, स. 347)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

# बाग़ या जहन्नम का गढ़ा

**अल्लाह ! अल्लाह !** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن कितनी अ़ज़ीम म-दनी सोच के मालिक होते थे ! हम तो ऐसा सोच भी नहीं सकते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ां व तरसां रहा करते हैं, हर दम मौत उन के पेशे नज़र रहती, क़ब्रो ह़श्र के मुआ़-मलात से कभी ग़ाफ़िल नहीं होते। आह ! क़ब्र का मुआ़-मला बे इन्तिहा तशवीश नाक है ! हाए हमारा क्या बनेगा ! हम तो अपनी **क़ब्र** को यक्सर भूले हुए हैं "**एह़याउल उ़लूम**" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो शख़्स **क़ब्र** को अक्सर याद करता है वोह मरने के बा'द अपनी **क़ब्र** को जन्नत के बाग़ों में से एक **बाग़** पाएगा और जो **क़ब्र** को भुला देगा वोह अपनी क़ब्र को जहन्नम के गढ़ों में से एक **गढ़ा** पाएगा।"

(एह़याउल उ़लूम, जि. 4, स. 238)

**गोरे नेकां बाग़ होगी ख़ुल्द का**

**मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा**

# आधी खजूर

**याद रखिये !** अपने छोटे छोटे म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों के भी हुकूक़ का ख़याल रखना होता है। इस मुआ़-मले में बे एह़तियात़ी बाइसे हलाकत और एह़तियात़ सबबे दुख़ूले जन्नत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی अपने मज्मूअ़ए अह़ादीस, अल मौसूम, ''सह़ीह़ बुख़ारी'' में नक़्ल करते हैं : **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : एक औ़रत जिस के साथ दो2 बच्चियां थीं, उस ने आ कर मुझ से सुवाल किया (या'नी मुझ से कुछ मांगा), मेरे पास उस वक़्त सिर्फ़ एक खजूर थी वोह मैं ने उस को दे दी उस ने खजूर के दो2 टुकड़े कर के दोनों2 को एक एक टुकड़ा दे दिया। जब सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने **अल्लाह** के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येह वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो फ़रमाया : ''जिस को लड़कियां अ़त़ा हुईं और उस ने उन के साथ अच्छा सुलूक किया तो येह उस के लिये जहन्नम से आड़ बन जाएंगी।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 4, स. 99, ह़दीस : 5995)

# शाही थप्पड़ का अन्जाम

**अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुक़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़-मले में किसी की रिआ़यत न फ़रमाते थे। चुनान्चे शाहे ग़स्सान नया नया मुसल्मान हुवा था और उस से ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बहुत ज़ियादा ख़ुशी हुई थी क्यूं कि इस के सबब अब उस की रिआ़या के ईमान लाने की उम्मीद पैदा हो गई थी। दौराने त़वाफ़ शाहे ग़स्सान के कपड़े पर किसी ग़रीब आ'राबी का पाउं आ गया, ग़ुस्से में आ कर उस ने ऐसा ज़ोरदार **त़मांचा** मारा कि आ'राबी का दांत शहीद हो गया। उस ने सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बारगाह में फ़रियाद की। शाहे ग़स्सान ने **त़मांचा** मारने का ए'तिराफ़ किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मुद्दई या'नी उस मज़्लूम आ'राबी से फ़रमाया कि आप शाहे ग़स्सान ने क़िसास या'नी बदला ले सकते हैं। येह सुन कर शाहे ग़स्सान ने बुरा मानते हुए कहा कि एक मा'मूली शख़्स मुझ जैसे बादशाह के बराबर कैसे हो गया जो इस को मुझ से बदला लेने का ह़क़ ह़ासिल हो गया ! आप

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : इस्लाम ने तुम दोनों[2] को बराबर कर दिया है। शाहे ग़स्सान ने क़िसास के लिये एक दिन की मोहलत ली और रात के वक़्त निकल भागा और मुरतद हो गया।

(ख़ुत्बाते मुहर्रम, स. 138, शब्बीर बिरादर्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

## फ़ारूक़े आ'ज़म की सादगी

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने शाहे ग़स्सान जैसे बादशाह की ज़र्रा बराबर भी रिआ़यत न फ़रमाई और उस बद नसीब के इस्लाम से फिर कर दोबारा कुफ़्र के गढ़े में कूद जाने से इस्लाम को भी कोई नुक़्सान न पहुंचा। बल्कि अगर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिआ़यत फ़रमा देते तो शायद इस्लाम को ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचता और लोगों का इस त़रह़ ज़ेह्न बनता कि इस्लाम कमज़ोर को त़ाक़त वर से مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़क़ नहीं दिलवा सकता। येह आ़दिलाना निज़ाम ही की ब-र-कत थी कि एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारुक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बिग़ैर किसी मुह़ाफ़िज़ के बे ख़ौफ़ो ख़त़र गरमी के मौसिम में एक दरख़्त के नीचे पथ्थर पर अपना मुबारक सर रख कर सो

रहे थे कि रूम का क़ासिद उन की तलाश में इधर आ निकला और उन्हें इस त़रह़ सोता देख कर हैरान रह गया कि क्या येही वोह शख़्स है जिस से सारी दुन्या लरज़ा बर अन्दाम है ! फिर वोह बोल उठा : ऐ उ़मर ! आप अद्ल करते हैं, हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़याल रखते हैं तो आप को पथ्थरों पर भी नींद आ जाती है और हमारे बादशाह ज़ुल्म करते हैं बन्दों के हुक़ूक़ पामाल करते हैं लिहाज़ा उन्हें **मख़्मली** बिस्तरों पर भी नींद नहीं आती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## बुरे ख़ातिमे के अस्बाब

**ज़ुल्म** की नुहूसत भी तो देखिये ''शाहे ग़स्सान'' का ईमान ही बरबाद हो गया ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वर्राक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **''बन्दों पर ज़ुल्म करना अक्सर सल्बे ईमान का सबब बन जाता है।''** ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम ह़कीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने पूछा : कोई ऐसा गुनाह भी है जो बन्दे को ईमान से मह़रूम कर देता है ?

फ़रमाया : **बरबादिये ईमान** के तीन अस्बाब हैं : **(1)** ईमान की ने'मत पर शुक्र न करना **(2)** ईमान ज़ाएअ़ होने का ख़ौफ़ न रखना **(3)** मुसल्मान पर ज़ुल्म करना। (तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, स. 204)

## ख़ुद को किसी का "ग़ुलाम" कहना कैसा ?

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने हुक़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़-मले में एह़तियात़ की ऐसी मिसालें क़ाइम की हैं कि अ़क़्ल हैरान रह जाती है। चुनान्चे **इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म** ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मशहूर शागिर्द क़ाज़ियुल कुज़ाह या'नी (CHIEF JUSTICE) ह़ज़रते **सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد के **मो'तमद** (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद) वज़ीर फ़ज़्ल बिन रबीअ़ की गवाही क़बूल करने से इन्कार कर दिया। ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد ने जब गवाही क़बूल न करने का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : एक बार मैं ने ख़ुद अपने कानों से सुना कि वोह आप से कह रहा था : "मैं आप का ग़ुलाम हूं"

अगर वोह इस में सच्चा था तो वोह आप के हक़ में गवाही देने के लिये ना अहल हुवा क्यूं कि आक़ा के हक़ में ग़ुलाम की गवाही ना मक़्बूल है और अगर बतौ़रे ख़ुशामद उस ने झूट बोला था तब भी इस की गवाही क़बूल नहीं की जा सकती कि जो शख़्स आप के दरबार में बेबाकी के साथ झूट बोल सकता है वोह मेरी अ़दालत में झूट से कब बाज़ रहेगा !

## क्या हाल है ?

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? हज़रते **सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ किस क़दर ज़हीन थे और अ़द्ल हो तो ऐसा कि किसी बन्दे के हक़ के मुआ़-मले में निहायत ही बेबाकी के साथ ख़लीफ़ए वक़्त के हक़ में उस के ख़ास वज़ीर की गवाही भी **मुस्तरद** कर दी । यहां वाक़ेई एक नुक्ता क़ाबिले ग़ौर है कि बसा अवक़ात ख़ुशा-मदाना तौ़र पर या यूं ही बे सोचे समझे अपने आप को एक दूसरे का ख़ादिम या ग़ुलाम या सग वग़ैरा बोल दिया जाता है मगर दिल उस के बिल्कुल उलट होता है, काश ! दिल व ज़बान यक्सां हो जाएं ।

हमारे अस्लाफ़ दिल और ज़बान की यक्सानियत का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे चुनान्चे **इमामुल मुअ़ब्बिरीन** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने एक शख़्स से पूछा : **क्या ह़ाल है**? वोह बोला : ''उस का क्या ह़ाल होगा जिस पर पांच सो दिरहम क़र्ज़ हो, बाल बच्चेदार हो मगर पल्ले कुछ न हो।'' आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह सुन कर घर तशरीफ़ लाए और एक हज़ार दिरहम ला कर उस को पेश करते हुए फ़रमाया : पांच सो दिरहम से अपना क़र्ज़ अदा कर दीजिये और मज़ीद पांच सो अपने घर ख़र्च के लिये क़बूल फ़रमाइये। इस के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने दिल में अ़हद किया कि आइन्दा किसी का ह़ाल दरयाफ़्त नहीं करूंगा। **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : **इमाम इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने येह अ़हद इस लिये किया कि अगर मैं ने किसी का ह़ाल पूछा और उस ने अपनी परेशानी बताई फिर अगर मैं ने उस की मदद नहीं की तो मैं पूछने के मुआ़-मले में ''मुनाफ़िक़'' ठहरूंगा! (कीमियाए सआ़दत, जि. 1, स. 408, इन्तिशाराते गन्जीना तहरान)

## मुनाफ़िक़ ठहरूंगा की वज़ाह़त

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی कितने खरे और सच्चे हुवा करते थे, उन का ज़ेह्न येह था कि जब तक सामने वाले से ह़क़ीक़ी मा'नों में हमदर्दी का जज़्बा न हो उस का ह़ाल न पूछा जाए और ह़ाल पूछने की सूरत में अगर वोह परेशानी बताए तो ह़त्तल मक़्दूर उस की इमदाद की जाए। याद रहे ! **इमाम इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن ने मदद न करने की सूरत में अपने लिये येह जो फ़रमाया कि "मुनाफ़िक़ ठहरूंगा" इस से यहां मुनाफ़िक़े अ़-मली मुराद है और निफ़ाक़े अ़-मली कुफ़्र नहीं।

## मज़्लूम की इमदाद करना ज़रूरी है

**जहां** ज़ुल्म करना बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी है वहां बा वुजूदे क़ुदरत मज़्लूम की मदद न करना भी जुर्म है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا कहते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मुझे मेरी इ़ज़्ज़त व जलाल

की क़सम मैं जल्दी या देर में **ज़ालिम** से बदला ज़रूर लूंगा। और उस से भी बदला लूंगा जो बा वुजूदे क़ुदरत **मज़्लूम** की इमदाद नहीं करता।" (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 3, स. 145, ह़दीस : 3421) मा'लूम हुवा जो मज़्लूम की मदद करने की क़ुदरत रखता है फिर भी नहीं करता वोह गुनहगार है। अलबत्ता जो मदद पर क़ादिर न हो उस पर गुनाह नहीं जैसा कि ह़ज़रते शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "याद रहे! मुसल्मान की मदद करने वाले के ह़ाल के ए'तिबार से कभी फ़र्ज़ होती है कभी वाजिब कभी **मुस्तह़ब**।"

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 665, फ़रीद बुक स्टॉल)

## क़ब्र से शो'ले उठ रहे थे !

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत फ़क़ीहे आ'ज़म हज़रते अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ कोट्लवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی अपनी किताब "अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन" में नक़्ल करते हैं : अबू मैसरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **एक क़ब्र से शो'ले उठ रहे थे** और मय्यित को अ़ज़ाब हो रहा था, मुर्दे ने पूछा : मुझे क्यूं मारते हो ? फ़िरिश्तों ने कहा कि एक **मज़्लूम** ने तुझ से फ़रियाद की मगर

तूने उस की फ़रियाद रसी नहीं की और एक दिन तूने **बे वुज़ू नमाज़** पढ़ी। (अख़्लाकुस्सालिह़ीन, स. 57, तम्बीहुल मुग़तर्रीन, स. 51)

## मुसल्मानों का ग़म

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह तो उस शख़्स का ह़ाल है जो मज़्लूम की मदद पर क़ुदरत होने के बा वुजूद उस की मदद नहीं करता तो ख़ुद ज़ालिम का क्या ह़ाल होगा ! मा'लूम हुवा कि मज़्लूम की ह़त्तल वस्अ़ मदद करनी चाहिये और मज़्लूम की मदद करने में बहुत अज्रो सवाब है। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن को मुसल्मानों की तकालीफ़ का किस क़दर एह़सास था इस का अन्दाज़ा "कीमियाए सआ़दत" में बयान कर्दा इस ह़िकायत से कीजिये चुनान्चे एक मर्तबा लोगों ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रो रहे हैं, जब रोने की वजह दरयाफ़्त की गई तो फ़रमाया : मैं उन बेचारे मुसल्मानों के ग़म में रो रहा हूं जिन्हों ने मुझ पर मज़ालिम किये हैं कि कल बरोज़े क़ियामत जब उन से सुवाल होगा कि तुम ने ऐसा क्यूं किया ? उन का कोई उ़ज़्र

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب و ترہیب)

न सुना जाएगा और वोह ज़लील व रुस्वा होंगे।

(कीमियाए सआदत, जि. 1, स. 393)

## चोर का ग़म

**एक** बुज़ुर्ग का वाक़िआ है कि उन की रक़म किसी ने निकाल ली थी और वोह रो रहे थे लोगों ने हमदर्दी का इज़्हार किया तो फ़रमाने लगे : मैं अपनी रक़म के ग़म में नहीं बल्कि चोर के ग़म में रो रहा हूं कि कल क़ियामत में बेचारा बतौरे मुजरिम पेश किया जाएगा उस वक़्त उस के पास कोई उ़ज़्र नहीं होगा। आह ! उस वक़्त उस की कितनी रुस्वाई होगी।

## चोरी का अ़ज़ाब

**चोर** की बात निकली तो चोरी का अ़ज़ाब भी अ़र्ज़ करता चलूं फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "**क़ुर्रतुल उ़यून**" में नक़्ल करते हैं : जिस ने किसी का थोड़ा सा माल भी चुराया वोह क़ियामत के रोज़ उस माल को अपनी गरदन में आग के तौ़क़ (हार) की शक्ल में लटका कर आएगा। और जिस ने थोड़ा सा भी माले ह़राम खाया उस के पेट में आग सुलगाई जाएगी और वोह इस क़दर ख़ौफ़नाक चीख़ें मारेगा कि जितने लोग अपनी क़ब्रों से उठेंगे कांप जाएंगे यहां तक कि

ख़ुदाए अहकमुल हाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ लोगों के सामने जो भी फ़ैसला फ़रमाए । (कुर्रतुल उ़यून, स. 392)

**गुनाहों के मरीज़ों का इलाज करने वालों के लिये म-दनी फूल**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बात चली थी मुसल्मानों का ग़म खाने की और हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی मुसल्मानों के गुनाहों के सबब होने वाले हौलनाक अ़ज़ाब के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौर कर के उन पर रह़्म करते, उन के लिये ग़मगीन होते और उन की इस्लाह़ के लिये कुढ़ते थे । हमें भी मुसल्मानों की हमदर्दी और ग़म गुसारी करनी चाहिये, इन की इस्लाह़ के लिये हर दम कोशां रहना चाहिये और इस में ह़ौसला बड़ा रखना और ह़िक्मते अ़-मली से काम लेना चाहिये । इस ज़िम्न में हमें डॉक्टर के त़रीक़े कार से समझने की कोशिश करनी चाहिये जैसा कि कड़वी दवा और इन्जेक्शन वग़ैरा के सबब मरीज़ अगर डॉक्टर से कतराता भी है तब भी डॉक्टर उस से नफ़रत नहीं बल्कि प्यार ही से पेश आता है इसी त़रह़ गुनाहों का मरीज़ चाहे हमारा मज़ाक़ उड़ाए, ख़्वाह हम पर फब्तियां कसे हमें भी

हिम्मत नहीं हारनी चाहिये, अगर हम सअ्ये पैहम करते रहेंगे और मैदाने अ़मल से भागने वालों को **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के आ़दी बनाने में काम्याब हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों के मरीज़ ज़रूर शिफ़ायाब होते चले जाएंगे।

## मुख़्तलिफ़ हुक़ूक़ सीखने का त़रीक़ा

**याद रखिये !** बन्दों के हुक़ूक़ के मुआ़-मले में वालिदैन का मुआ़-मला सरे फ़ेहरिस्त है इस की तफ़्सीली मा'लूमात मक-त-बतुल मदीना का जारी कर्दा ऑडियो केसेट **''मां बाप को सताना ह़राम है''** और निगराने शूरा की VCD **''मां बाप के हुक़ूक़''** समाअ़त फ़रमाइये। इसी त़रह़ औलाद के हुक़ूक़, मियां बीवी के हुक़ूक़, क़राबत दारों के हुक़ूक़, पड़ोसियों के हुक़ूक़ वग़ैरा जो हैं वोह आ़म बन्दों के हुक़ूक़ से ज़ियादा अहम्मिय्यत रखते हैं। येह सारे हुक़ूक़ इस मुख़्तसर से बयान में नहीं सीखे जा सकते इस के लिये मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ इन तीन[3] रसाइल **(1)** वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ **(2)** हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों और **(3)** औलाद के हुक़ूक़

का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये नीज़ **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हुक़ूक़ुल इबाद के बारे में मा'लूमात के साथ साथ एह़तियात़ का जज़्बा भी पैदा होगा और एह़तियात़ करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जन्नत का रास्ता आसान हो जाएगा।

## ज़ालिम के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ की निशान देही

मुसल्मानों को सताने वालों, लोगों के दिल दुखाने वालों, लोगों के बुरे नाम रखने वालों, लोगों पर फब्तियां कसने वालों, लोगों की नक़्लें उतारने वालों, और लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है, सुनो ! सुनो ! रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 **सू-रतुल ह़ुजूरात** आयत नम्बर 11 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾

**मेरे आक़ा आ'ला हजरत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, इमामे इश्क़ो महब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, आफ़्ताबे विलायत, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोह्रए आफ़ाक़ तर-ज-मए क़ुरआन, कन्ज़ुल ईमान में इस का तरजमा यूं करते हैं : ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें अ़जब नहीं कि वोह इन हंसी हंसने वालों से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में त़ा'ना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो। क्या ही बुरा नाम मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें वोही ज़ालिम हैं।

## किसी की हंसी उड़ाना गुनाह है

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** किसी की ग़ुरबत या ह़सब नसब या जिस्मानी ऐ़ब पर हंसना गुनाह है इसी त़रह़

किसी मुसल्मान को बुरे अल्क़ाब से पुकारना भी गुनाह है, किसी को कुत्ता, गधा, सुवर वग़ैरा नहीं कह सकते, इसी त़रह़ किसी में ऐ़ब मौजूद हो तब भी उसे उस ऐ़ब के साथ नहीं पुकार सकते म-सलन ऐ अन्धे ! अबे काने ! ओ लम्बे ! अरे ठिंगने ! वग़ैरा, हां ज़रूरतन पहचान करवाने के लिये नाबीना वग़ैरा कह सकते हैं। लोगों पर हंसने, बुरे अल्क़ाब से पुकारने और मज़ाक़ उड़ाने वालों को क़ुरआने पाक ने "फ़ासिक़" का फ़तवा इर्शाद फ़रमाया है और जो तौबा न करे उसे ज़ालिम क़रार दिया है। लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वालो ! कान खोल कर सुन लो !

## मज़ाक़ उड़ाने का अ़ज़ाब

**जब** किसी मुसल्मान का मज़ाक़ उड़ाने को जी चाहे तो ख़ुदारा इस रिवायत पर ग़ौर फ़रमा लिया कीजिये जिस में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, शहन्शाहे अबरार, सरकारे वाला तबार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, साहि़बे पसीनए ख़ुश्बूदार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : क़ियामत के रोज़ लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले के सामने जन्नत का एक दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा कि आओ ! आओ ! तो वोह बहुत ही बेचैनी और ग़म में डूबा हुवा उस दरवाज़े के सामने आएगा मगर जैसे ही दरवाज़े के पास पहुंचेगा वोह दरवाज़ा बन्द हो जाएगा । फिर जन्नत का एक दूसरा दरवाज़ा खुलेगा और उस को पुकारा जाएगा कि आओ ! चुनान्चे येह बेचैनी और रन्जो ग़म में डूबा हुवा उस दरवाज़े के पास जाएगा तो वोह दरवाज़ा भी बन्द हो जाएगा । इसी त़रह़ उस के साथ मुआ़-मला होता रहेगा यहां तक कि जब दरवाज़ा खुलेगा और पुकार पड़ेगी तो वोह नहीं जाएगा । (किताबुस्समत मअ़ मौसूअ़ह इमाम इब्ने अबिद्दुन्या, जि. 7, स. 183,184, रक़म : 287)

## मुआ़फ़ी मांग लीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सब घबरा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ कर लीजिये, सच्ची तौबा कर लीजिये और ठहरिये ! बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी के मुआ़-मले में

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सिर्फ़ तौबा करना काफ़ी नहीं, बन्दों के जो जो ह़ुक़ूक़ पामाल किये हों वोह भी अदा करने होंगे, म-सलन माली ह़क़ है तो उस का माल लौटाना होगा, दिल दुखाया है तो मुआ़फ़ करवाना होगा। आज तक जिस जिस का मज़ाक़ उड़ाया, बुरे अल्क़ाब से पुकारा, त़ा'ना ज़नी और त़न्ज़ बाज़ी की, दिल आज़ार नक़्लें उतारीं, दिल दुखाने वाले अन्दाज़ में आंखें दिखाईं, घूरा, डराया, गाली दी, ग़ीबत की और उस को पता चल गया। झाड़ा, मारा, ज़लील किया, अल ग़रज़ किसी त़रह़ भी बे इजाज़ते शर-ई ईज़ा का बाइस बने उन सब से फ़रदन फ़रदन मुआ़फ़ करवा लीजिये, अगर किसी फ़र्द के बारे में येह सोच कर बाज़ रहे कि मुआ़फ़ी मांगने से उस के सामने मेरी ''पोज़ीशन डाउन' हो जाएगी तो ख़ुदारा ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क़ियामत के रोज़ अगर येही फ़र्द आप की नेकियां ह़ासिल कर के अपने गुनाह आप के सर डाल देगा उस वक़्त क्या होगा ! ख़ुदा की क़सम ! सह़ीह़ मा'नों में आप की ''पोज़ीशन'' की धज्जियां तो उस वक़्त उड़ेंगी और आह ! कोई दोस्त बिरादर या

अ़ज़ीज़ हमदर्दी करने वाला भी न मिलेगा। जल्दी कीजिये ! जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के क़दमों में गिर कर, अपने अ़ज़ीज़ों के आगे हाथ जोड़ कर, अपने मा तहूतों के पाउं पकड़ कर अपने इस्लामी भाइयों और दोस्तों से गिड़गिड़ा कर, उन के आगे ख़ुद को ज़लील कर के आज दुन्या में मुआ़फ़ी मांग कर आख़िरत की इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की सअ़ूय फ़रमा लीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰه या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है। (शु-अ़बुल ईमान, जि. 6, स. 297, ह़दीस : 8229, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत) सब एक दूसरे से **मुआ़फ़ी** मांग लीजिये और सब एक दूसरे को **मुआ़फ़** भी कर दीजिये।

## मैं ने मुआ़फ़ किया

**जिस** के साथ लोग ज़ियादा मुन्सलिक होते हैं उस से बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी के सुदूर का इम्कान भी ज़ियादा होता है। मुझ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ से वाबस्तगान की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा है, आह ! न जाने कितनों का मुझ से दिल दुख जाता होगा ! ! मैं हाथ जोड़ कर अ़र्ज़ करता हूं : मेरी ज़ात से किसी की जान, माल या आबरू को **नुक़्सान** पहुंचा हो वोह चाहे तो

बदला ले ले या मुझे मुआ़फ़ कर दे, अगर किसी का मुझ पर **क़र्ज़** आता हो तो बेशक वुसूल कर ले अगर लेना नहीं चाहता तो मुआ़फ़ी से नवाज़ दे। जो मेरा क़र्ज़दार है मैं अपनी **ज़ाती रक़में** उस को **मुआ़फ** करता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे सबब से किसी मुसल्मान को अ़ज़ाब न करना। मैं ने हर मुसल्मान को अपने अगले पिछले हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये चाहे जिस ने मेरी दिल आज़ारी की या आइन्दा करेगा, मुझे मारा या आइन्दा मारेगा, मेरी जान लेने की कोशिश की या आइन्दा करेगा या शहीद कर डालेगा मेरे हुक़ूक़ के तअ़ल्लुक़ से मेरी त़रफ़ से हर मुसल्मान के लिये **आ़म मुआ़फ़ी** का ए'लान है। ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** ! तू मुझ आ़जिज़ व मिस्कीन बन्दे के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा कर मुझे बे ह़िसाब बख़्श दे।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !

***सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब***

***बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है***

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

सब इस्लामी भाई जो इस वक़्त बैनल अक़्वामी तीन[3]

रोज़ा इज्तिमाअ़ में जम्अ़ हैं या म-दनी चेनल व INTERNET के ज़रीए़ दुन्या में जहां कहीं मुझे सुन रहे हैं या तमाम वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो ऑडियो या विडियो केसेट के ज़रीए़ मुझे समाअ़त फ़रमा रहे हैं या तह़रीरी बयान पढ़ रहे हैं वोह तवज्जोह फ़रमाएं कि बन्दे का दुन्या में जो **बड़े से बड़ा ह़क़** तसव्वुर किया जा सकता है समझ लीजिये मैं ने आप का वोह ह़क़ तलफ़ कर दिया है नीज़ इस के इ़लावा भी जितने हुक़ूक़ तलफ़ किये हों अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुझे वोह सब के सक हुक़ूक़ मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये बल्कि एह़सान बिल एह़सान होगा कि आइन्दा के लिये पेशगी ही **मुआ़फ़ी** से नवाज़ दीजिये। **बराए करम** ! दिल की गहराई के साथ एक बार ज़बान से कह दीजिये : "मैं ने मुआ़फ़ किया" جَزَاكُمُ اللّٰهُ خَيْرًا وَّاَحْسَنَ الْجَزَاء ।

## रक़में लौटानी होंगी

**जिस** पर किसी का क़र्ज़ आता है वोह चुका दे और अगर अदाएगी में ताख़ीर की है तो मुआ़फ़ी भी मांगे, जिस से रिश्वत ली, जिस की जैब काटी, जिस के यहां **चोरी** की, जिस

का **माल लूटा** उन सब को उन के अम्वाल लौटाने ज़रूरी हैं, या उन से मोहलत ले या **मुआ़फ़** करवा ले और जो तक्लीफ़ पहुंची उस की भी मुआ़फ़ी मांगे। अगर वोह शख़्स **फ़ौत** हो गया है तो वारिसों को दे अगर कोई वारिस न हो तो उतनी रक़म स-दक़ा करे। अगर लोगों का माल दबाया है मगर येह याद नहीं कि किस किस का माले ना ह़क़ लिया है तब भी उतनी रक़म स-दक़ा करे या'नी मसाकीन को दे दे। **स-दक़ा** कर देने के बा'द भी अगर अहले ह़क़ ने मुत़ा-लबा कर दिया तो उस को देना पड़ेगा।

## जो याद नहीं उन से किस त़रह़ मुआ़फ़ करवाएं ?

**जो** इस्लामी भाई ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़-मले में ख़ौफ़ज़दा हैं और अब सोच में पड़ गए हैं कि हम ने तो न जाने कितनों की ह़क़ त-लफ़ियां की हैं और कितनों ही का दिल दुखाया है, अब हम किस किस को कहां कहां तलाश करें ! तो ऐसों की ख़िदमतों में अ़र्ज़ है कि जिन जिन की **दिल आज़ारी** वग़ैरा की है उन में से जितनों से राबित़ा मुम्किन है उन से मिल कर या फ़ोन पर या तह़रीरी त़ौर पर राबित़ा कर के **मुआ़फ़ी**

**तलाफ़ी** की तरकीब बना लीजिये उन को राज़ी कर लीजिये और जो जो **ग़ाइब** हैं या फ़ौत हो चुके हैं या जिन के बारे में याद नही कि वोह कौन कौन लोग हैं तो हर **नमाज़** के बा'द उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कीजिये, हर **नमाज़** के बा'द इस त़रह़ कहने का मा'मूल बना लीजिये : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी और आज तक मैं ने जिन जिन मुसल्मानों की ह़क़ त-लफ़ी की है उन सब की मग़्फ़िरत फ़रमा।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, मायूस न हों, ''निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की नदामत रंग लाएगी और **मीठे मीठे मुस्तफा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ हुक़ूक़ुल इ़बाद की **मुआ़फ़ी के अस्बाब** भी करमे खु़दा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से हो जाएंगे। चुनान्चे

## अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सुल्ह़ करवाएगा

**ह़ज़रते सय्यिदुना** अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक रोज़ सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मोह़्तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे, आप

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस लिये तबस्सुम फ़रमाया ? इर्शाद फ़रमाया : मेरे दो2 उम्मती **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दो2 ज़ानू गिर पड़ेंगे, एक अ़र्ज़ करेगा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस से मेरा इन्साफ़ दिला कि इस ने मुझ पर **ज़ुल्म** किया था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मुद्दई** (या'नी दा'वा करने वाले) से फ़रमाएगा : अब येह बेचारा (या'नी जिस पर दा'वा किया गया है वोह) क्या करे इस के पास तो कोई नेकी बाक़ी नहीं। **मज़्लूम** (मुद्दई) अ़र्ज़ करेगा : ''मेरे गुनाह इस के ज़िम्मे डाल दे।'' इतना इर्शाद फ़रमा कर सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े, फ़रमाया : वोह दिन बहुत अ़ज़ीम दिन होगा क्यूं कि उस वक़्त (या'नी बरोज़े क़ियामत) हर एक इस बात का ज़रूरत मन्द होगा कि उस का बोझ हलका हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम (या'नी मुद्दई) से फ़रमाएगा : देख तेरे सामने क्या है ? वोह अ़र्ज़ करेगा :

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ऐ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने सामने सोने के बड़े शहर और बड़े बड़े महल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं येह शहर और उ़म्दा महल्लात किस पैग़म्बर या सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : येह उस के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा करे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : इन की क़ीमत कौन अदा कर सकता है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : तू अदा कर सकता है। वोह अ़र्ज़ करेगा : किस त़रह़ ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : इस त़रह़ कि तू अपने भाई के हुक़ूक़ **मुआ़फ़ कर दे**। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने सब हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : अपने भाई का हाथ पकड़ और दोनों[2] इकठ्ठे जन्नत में चले जाओ। फिर सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और मख़्लूक़ में **सुल्ह़** करवाओ क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी बरोज़े क़ियामत मुसल्मानों में **सुल्ह़** करवाएगा। (अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जि. 5, स. 795, ह़दीस : 8758, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जिस ने मेरी **सुन्नत से मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 1, स. 55, ह़दीस **:** 175, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत)

*सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें*

*नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## "एक चुप हज़ार सुख" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से बात चीत करने के 12 म-दनी फूल

**(1)** मुस्करा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत कीजिये **(2)** मुसल्मानों की दिलजूई की निय्यत से छोटों के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिये

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब कमाने के साथ साथ दोनों[2] के नज़्दीक आप मुअ़ज़्ज़ज़ रहेंगे **(3)** चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आजकल बे तकल्लुफ़ी में अक्सर दोस्त आपस में करते हैं सुन्नत नहीं **(4)** चाहे एक दिन का बच्चा हो अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उस से भी आप जनाब के साथ गुफ़्त-गू की आ़दत बनाइये। आप के अख़्लाक़ भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उ़म्दा होंगे और बच्चा भी आदाब सीखेगा **(5)** बात चीत करते वक़्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंग्लियों के ज़रीए़ बदन का मैल छुड़ाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं, इस से दूसरों को घिन आती है **(6)** जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इ़त्मीनान से सुनिये। उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ कर देना सुन्नत नहीं **(7)** बात चीत करते हुए बल्कि किसी भी ह़ालत में क़ह्क़हा न लगाइये कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी क़ह्क़हा नहीं लगाया **(8)** ज़ियादा बातें करने और बार बार क़ह्क़हा लगाने से हैबत जाती रहती है **(9)** सरकारे मदीना

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम किसी बन्दे को देखो कि उसे दुन्या से बे रग़बती और कम बोलने की ने'मत अ़ता की गई है तो उस की क़ुरबत व सोहबत इख़्तियार करो क्यूं कि उसे हिक्मत दी जाती है।'' (सु-ननेइब्ने माजह, जि. 4, स. 422, ह़दीस : 4101) **(10)** फ़रमाने मुस्तफा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** **''जो चुप रहा उस ने नजात पाई।''** (सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 4, स. 225, ह़दीस : 2509) मिरआतुल मनाजीह़ में है : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि : गुफ़्त-गू की चार क़िस्में हैं : **(1)** ख़ालिस मुज़िर (या'नी मुकम्मल तौ़र पर नुक़्सान देह) **(2)** ख़ालिस मुफ़ीद **(3)** मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) भी मुफ़ीद भी **(4)** न मुज़िर न मुफ़ीद। ख़ालिस मुज़िर (या'नी मुकम्मल नुक़्सान देह) से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है, ख़ालिस मुफ़ीद कलाम (बात) ज़रूर कीजिये, जो कलाम मुज़िर भी हो मुफ़ीद भी उस के बोलने में एह़तियात करे बेहतर है कि न बोले और चौथी क़िस्म के कलाम में वक़्त ज़ाएअ़ करना है। इन कलामों में इम्तियाज़ करना मुश्किल है लिहाज़ा ख़ामोशी बेहतर है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 464) **(11)** किसी से जब बात चीत की जाए

तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ बात की जाए **(12)** बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ कीजिये, गाली गलोच से इज्तिनाब करते रहिये और याद रखिये कि किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर-ई गाली देना ह़रामे क़त़ई है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 127) और बे ह़याई की बात करने वाले पर जन्नत ह़राम है। हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई (बे ह़याई की बात) से काम लेता है।" (किताबुस्समत मअ़ह़ू मौसूअ़ह अल इमाम इब्ने अबिद्दुन्या, जि. 7, स. 204, रक़म : 325, अल मक-त-बतुल अ़स्रिय्या बैरूत)

**बात चीत करने** की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने और दीगर सेंकड़ों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 120 स-फ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफर भी है।

**सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो**
**होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

| उन्वान | सफ़हा | उन्वान | सफ़हा |
|---|---|---|---|
| मोतियों वाला ताज | 1 | मुसल्मान की ता'रीफ़ | 24 |
| ख़ौफ़नाक डाकू | 2 | मुसल्मान को घूरना, डराना | 25 |
| ज़ालिम को मोहलत मिलती है | 4 | हम शरीफ़ के साथ शरीफ़ और | 26 |
| औंधे मुंह जहन्नम में | 6 | जो बुराई करे उस पर भी ज़ुल्म न करो | 28 |
| आग की बेड़ियां | 6 | पराई क़लम लौटाने के लिये सफ़र | 28 |
| मुफ़्लिस कौन ? | 7 | बिग़ैर इजाज़त किसी की चप्पल पहनना कैसा ? | 29 |
| लरज़ उठो ! | 8 | ख़ुश्बू सूंघने में एह़तियात़ | 31 |
| आधा सेब | 10 | चराग़ बुझा दिया ! | 32 |
| ख़िलाल का वबाल | 11 | बाग़ या जहन्नम का गढ़ा | 33 |
| गेहूं का दाना तोड़ने का उख़रवी नुक़्सान | 12 | आधी खजूर | 34 |
| सात सो बा जमाअ़त नमाज़ें | 14 | शाही थप्पड़ का अन्जाम | 35 |
| अदाए क़र्ज़ में बिला वजह ताख़ीर गुनाह है | 15 | फ़ारूक़े आ'ज़म की सादगी | 36 |
| ग़ैरत मन्दी का तक़ाज़ा | 16 | बुरे ख़ातिमे के अस्बाब | 37 |
| नेकियों के ज़रीए़ मालदार | 17 | ख़ुद को किसी का "ग़ुलाम" कहना कैसा ? | 38 |
| अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ईज़ा देने वाला | 19 | क्या ह़ाल है ? | 39 |
| दिल हिला देने वाली ख़ारिश | 20 | मुनाफ़िक़ ठहरूंगा की वज़ाह़त | 41 |
| जन्नत में घूमने वाला | 22 | मज़्लूम की इमदाद करना ज़रूरी है | 41 |
| आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे इन्तिहा आ़जिज़ी | 22 | क़ब्र से शो'ले उठ रहे थे ! | 42 |
| मैं ने तेरा कान मरोड़ा था | 23 | मुसल्मानों का ग़म | 43 |

| उन्वान | सफहा | उन्वान | सफहा |
|---|---|---|---|
| चोर का ग़म | 44 | मुआ़फ़ी मांग लीजिये | 50 |
| चोरी का अ़ज़ाब | 44 | मैं ने मुआ़फ़ किया | 52 |
| मुख़्तलिफ़ हुक़ूक़ सीखने का त़रीक़ा | 46 | रक़में लौटानी होंगी | 54 |
| ज़ालिम के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ की निशान देही | 47 | जो याद नहीं उन से किस त़रह़ मुआ़फ़ करवाएं? | 55 |
| किसी की हंसी उड़ाना गुनाह है | 48 | अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सुल्ह़ करवाएगा | 56 |
| मज़ाक़ उड़ाने का अ़ज़ाब | 49 | बात चीत करने के 12 म-दनी फूल | 59 |


# ज़ुल्म का अन्जाम

येह रिसाला (**ज़ुल्म का अन्जाम**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।


**राबित़ा :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

**मक-त-बतुल मदीना**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात,

MO. 9374031409

E-mail : maktabahind@gmail.com